Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

M. A II Sem.
CC-07 : Gandhian Philosophy

"Education" (शिक्षा)

गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का मूल लक्ष्य नैतिक शिक्षा है, चरित्र-निर्माण है, इस विश्वास को उत्पन्न करना है कि आदर्शों की प्राप्ति के लिए स्वार्थ तथा वैयक्तिक सुख से ऊपर उठना अनिवार्य है किन्तु इतना ही नहीं - शिक्षा का अर्थ है शरीर तथा मन के विकास के साथ 'आत्मा' का विकास भी हो। इसी कारण शिक्षा का अनिवार्य पक्ष आध्यात्मिक शिक्षा है।

गाँधी जी का कहना है कि पढ़ना लिखना आ जाना शिक्षित होना नहीं है। उनके अनुसार तो हर व्यक्ति कुछ मूल प्रवृत्तियों तथा शक्तियों के साथ पैदा होता है तथा शिक्षा का लक्ष्य हर व्यक्ति में इन शक्तियों को आरम्भ से विकसित करना है। गाँधी जी का कहना है कि ऐसी शिक्षा सम्भव तभी हो सकती है जब सैद्धान्तिक जानकारी के साथ-साथ व्यावहारिक क्षमता बढ़ाने की भी सीख दी जाय। ड्यूवी के समान गाँधी भी कर के सीखने (Learning by doing) के महत्व पर बल देते हैं। अतः इनकी अनुशंसा है कि शिक्षा का एक अनिवार्य अंग है कुछ कार्य कुशलता सीखना। हर व्यक्ति को शिक्षा में कुछ हस्त-शिल्प जैसी क्षमता प्राप्त करनी चाहिए - वह लकड़ी का कार्य सीखे, बुनाई का कार्य सीखे, मिट्टी के बर्तन बनाना सीखे या ऐसा ही कुछ और। यदि शिक्षा के क्रम में व्यक्ति शारीरिक श्रम करने के महत्व को समझते तथा श्रम-शक्ति की उपयोगिता दिशा में प्रवाहित कर सके तो व्यक्ति का अन्तर हर प्रकार से विकसित हो पायेगा। इसी कारण गाँधी बुनियादी शिक्षा (Basic Education) की बात करते हैं। इस प्रकार की शिक्षा में बच्चे को यह सीख दी जाती है कि वह स्वयं करके 'कार्य कुशलता'

प्राप्त कर सके। वह यदि स्वर्णकार से सीखता है, तो वह स्पष्टतः समझ लेता है कि कोई कार्य एक प्रकार से तो सम्पन्न होता है, किन्तु अन्य प्रकार से सम्पन्न नहीं होता। इस प्रकार से सीखने का एक स्पष्ट लाभ है — जो भारत में प्रचलित शिक्षा-पद्धति में नहीं है, क्योंकि बच्चे जो स्कूल या कालेज में सीखते हैं, उसके सम्बन्ध में सदा एक प्रश्न-चिह्न बना रहता है कि उसकी वास्तविक जीवन में क्या उपयोगिता है। किन्तु बुनियादी शिक्षा में सीखने के क्रम में ही व्यक्ति उस सीख की व्यावहारिक उपयोगिता को भी समझ लेता है।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को वास्तविक कार्यों के पूर्णतया योग्य बनाना। अतः जिस प्रकार के कार्य में पेशे में व्यक्ति जाना चाहता है उसी कार्य को केन्द्र बना उसी के अनुरूप उसके शरीर मन तथा आत्मा का विकास होना चाहिए जिससे उसमें आध्यात्मिक शक्ति भी बढ़े, तथा कार्य करने की क्षमता भी प्राप्त हो। गाँधी जी के अनुसार इस प्रकार की शिक्षा का एक अन्य लाभ और है — यह एक शान्त सामाजिक क्रान्ति का आधार बन जाता है। यह ग्रामीण-जीवन तथा शहरी जीवन को निकट ले आता है अतः वर्ग-भेद के एक मूल आधार की तीव्रता कम कर देता है, फलस्वरूप ग्रामों की संस्कृति भी नष्ट हो जाने से बच जाती है, क्योंकि शहरी जीवन का आकर्षण कम हो जाता है। इस प्रकार शहर तथा गाँवों के नागरिकों का अन्तर मिटने लगता है। इसका एक और लाभ यह भी है कि इस प्रकार से शिक्षित-व्यक्ति

2013 OCTOBER

NOVEMBER 2013

WK	M	T	W	T	F	S	S
44					1	2	3
45	4	5	6	7	8	9	10
46	11	12	13	14	15	16	17
47	18	19	20	21	22	23	24
48	25	26	27	28	29	30	

DECEMBER 2013

WK	M	T	W	T	F	S	S
48	30	31					1
49	2	3	4	5	6	7	8
50	9	10	11	12	13	14	15
51	16	17	18	19	20	21	22
52	23	24	25	26	27	28	29

Week 43
Day (296-069)

WEDNESDAY ■ 23

अपने शिल्प का पूर्ण रूप से
जानकार होता है, अतः उसके शोषण की
सम्भावना भी कम हो जाती है। इस प्रकार शिक्षा
8 शास्त्रियों का विश्वास है कि इस प्रकार की व्यावसायिक
शिक्षा के बड़े ही उपयोगी परिणाम प्रकाश में
9 आयेंगे।

10

11

12

1

2

3

4

5

6

7